REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2021

बिलासपुर ज़िले में महिला सशक्तिकरण और स्वयं-सहायता समूहों की भूमिका का समाजशास्त्रीय अध्ययन

सुश्री आरती तिवारी
सहायक प्राध्यापक,
समाजशास्त्र (प्रभारी प्राचार्य) एस. बी. टी. महाविद्यालय, जिला बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश :

महिला सशक्तिकरण समकालीन समाजशास्त्रीय तथा विकासात्मक चिंतन का एक प्रमुख विषय बनकर उभरा है, विशेषकर भारत जैसे विकासशील देशों में। महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार, निर्णय-निर्माण क्षमता के विकास तथा आत्मविश्वास की वृद्धि के लिए स्वयं सहायता समूहों को एक प्रभावी जमीनी व्यवस्था के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है। प्रस्तुत अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर ज़िले में महिला सशक्तिकरण को प्रोत्साहित करने में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका का विश्लेषण करता है। अध्ययन में स्वयं सहायता समूहों का महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता, सामाजिक सहभागिता, जागरूकता स्तर तथा नेतृत्व विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का परीक्षण किया गया है। शोध हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का सहारा लिया गया। अध्ययन के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं की आय-स्तर में वृद्धि, बचत प्रवृत्तियों के विकास, सामाजिक प्रतिष्ठा में सुधार तथा पारिवारिक एवं सामुदायिक निर्णय-निर्माण में सहभागिता बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। फिर भी, अपर्याप्त प्रशिक्षण, सीमित बाज़ार उपलब्धता और बाहरी सहायता पर निर्भरता जैसी समस्याएँ स्वयं सहायता समूहों की पूर्ण क्षमता को बाधित करती हैं। अध्ययन के अंत में स्वयं सहायता समूहों को सतत महिला सशक्तिकरण के प्रभावी साधन के रूप में सुदृढ़ करने हेतु उपयुक्त नीतिगत सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

मुख्य शब्द : *महिला सशक्तिकरण, स्वयं सहायता समूह, सूक्ष्म वित्त, सामाजिक परिवर्तन, बिलासपुर ज़िला.*

प्रस्तावना:

भारत की कुल जनसंख्या में महिलाओं की भागीदारी लगभग आधी है, किंतु ऐतिहासिक रूप से शिक्षा, रोजगार, संपत्ति के स्वामित्व तथा निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया में उनकी स्थिति हाशिये पर रही है। समाजशास्त्रीय अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि लैंगिक असमानता की जड़ें पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं, सांस्कृतिक मान्यताओं और आर्थिक निर्भरता में गहराई तक समाई हुई हैं। ग्रामीण तथा अर्ध-शहरी क्षेत्रों में महिलाएँ प्रायः गरीबी, निरक्षरता, सीमित गतिशीलता तथा संस्थागत ऋण की अनुपलब्धता जैसी अनेक प्रकार की वंचनाओं का सामना करती हैं।

इसी परिप्रेक्ष्य में स्वयं सहायता समूह महिलाओं के विकास का एक सशक्त सामूहिक माध्यम बनकर उभरे हैं। स्वयं सहायता समूह महिलाओं के छोटे, अनौपचारिक और स्वैच्छिक संगठन होते हैं, जिनके माध्यम से वे नियमित बचत करती हैं, ऋण प्राप्त करती हैं तथा आय-सृजन गतिविधियों में संलग्न होती हैं। भारत में राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक द्वारा प्रारंभ किए गए स्वयं सहायता समूह-बैंक संबद्धता कार्यक्रम से इस आंदोलन को व्यापक गति मिली, जिसका उद्देश्य गरीब महिलाओं में वित्तीय समावेशन और सामाजिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देना था।

छत्तीसगढ़ राज्य का बिलासपुर ज़िला ग्रामीण और जनजातीय जनसंख्या की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र की महिलाएँ कम साक्षरता, सीमित रोजगार अवसर और कृषि एवं असंगठित श्रम पर निर्भरता जैसी सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का सामना करती हैं। बिलासपुर में स्वयं सहायता समूहों के गठन और विस्तार ने इन समस्याओं से निपटने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। प्रस्तुत अध्ययन बिलासपुर ज़िले में स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण के समाजशास्त्रीय आयामों का परीक्षण करता है।

अध्ययन के उद्देश्य:

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

१) बिलासपुर ज़िले की स्वयं सहायता समूह सदस्य महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।

२) महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका का विश्लेषण करना।

३) महिलाओं की सामाजिक सहभागिता और निर्णय-निर्माण पर स्वयं सहायता समूहों के प्रभाव का मूल्यांकन करना।

४) सतत सशक्तिकरण की प्राप्ति में स्वयं सहायता समूहों के समक्ष आने वाली चुनौतियों की पहचान करना।

५) बिलासपुर ज़िले में स्वयं सहायता समूहों को सुदृढ़ बनाने हेतु उपयुक्त उपाय सुझाना।

अनुसंधान पद्धति :

प्रस्तुत अध्ययन में बिलासपुर ज़िले में स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण का विश्लेषण करने हेतु वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान अभिकल्प को अपनाया गया है। प्राथमिक आँकड़े २०० महिला स्वयं सहायता समूह सदस्यों से संरचित प्रश्नावली तथा व्यक्तिगत साक्षात्कारों के माध्यम से संकलित किए गए। द्वितीयक आँकड़े सरकारी प्रतिवेदन, राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक के प्रकाशन, जनगणना आँकड़े तथा विभिन्न शोध अध्ययनों से प्राप्त किए गए। नमूना चयन के लिए सरल यादृच्छिक नमूना पद्धति का प्रयोग किया गया तथा आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत, औसत, सारणियों एवं गुणात्मक विवेचन द्वारा किया गया।

महिला सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका(आँकड़ों का विश्लेषण एवं अर्थनिर्वचन) :

बिलासपुर ज़िला छत्तीसगढ़ राज्य का एक महत्वपूर्ण ज़िला है, जिसकी पहचान मुख्यतः कृषि आधारित अर्थव्यवस्था और पर्याप्त जनजातीय जनसंख्या से होती है। यहाँ की अधिकांश जनसंख्या आजीविका के लिए कृषि, पशुपालन तथा असंगठित आर्थिक गतिविधियों पर निर्भर है। हाल के वर्षों में सरकारी एवं गैर-सरकारी पहलों के माध्यम से स्वयं सहायता समूहों की संख्या में निरंतर वृद्धि हुई है। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य गरीबी उन्मूलन, वित्तीय समावेशन और सामाजिक विकास को बढ़ावा देना रहा है, जिससे महिलाओं को आर्थिक एवं सामुदायिक गतिविधियों में भागीदारी के नए अवसर प्राप्त हुए हैं।

बिलासपुर ज़िले में महिला सशक्तिकरण को प्रोत्साहित करने में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। सामूहिक बचत और संस्थागत ऋण की सुविधा के माध्यम से इन समूहों ने महिलाओं की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया है। नियमित बचत से वित्तीय अनुशासन विकसित हुआ है तथा समूहों के माध्यम से प्राप्त ऋण का उपयोग आय-सृजन गतिविधियों, घरेलू आवश्यकताओं, शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और लघु व्यवसायों में किया गया है। इससे महिलाओं की साहूकारों पर निर्भरता में कमी आई है और उनकी आर्थिक सुरक्षा में वृद्धि हुई है।

स्वयं सहायता समूहों में सहभागिता से महिलाओं का सामाजिक सशक्तिकरण भी हुआ है। नियमित बैठकों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और सामुदायिक संपर्कों से महिलाओं की गतिशीलता और सामाजिक संपर्क में वृद्धि हुई है। इन समूहों के माध्यम से महिलाओं ने सशक्त सामाजिक नेटवर्क और सामूहिक पहचान विकसित की है। इसके अतिरिक्त, स्वयं सहायता समूह मद्यपान, घरेलू हिंसा, स्वास्थ्य जागरूकता

तथा बाल शिक्षा जैसे सामाजिक मुद्दों पर चर्चा और समाधान का मंच प्रदान करते हैं, जिससे समुदाय में सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा मिलता है।

स्वयं सहायता समूहों की सदस्यता ने महिलाओं की पारिवारिक निर्णय-निर्माण में भूमिका को सशक्त किया है। समूह से जुड़ी महिलाएँ अब पारिवारिक वित्त, बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य संबंधी निर्णयों में अधिक सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं। समूह सहभागिता से उनका आत्मविश्वास और सौदेबाजी की क्षमता बढ़ी है, जिससे वे परिवार के भीतर अपने विचार स्वतंत्र रूप से व्यक्त कर पाती हैं।

मानसिक सशक्तिकरण भी स्वयं सहायता समूहों की सहभागिता का एक महत्वपूर्ण परिणाम है। निरंतर समूह संपर्क से महिलाओं में आत्मसम्मान, नेतृत्व क्षमता और स्व-मूल्य की भावना का विकास हुआ है। अनेक महिलाओं ने बताया कि स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद उन्हें परिवार और समाज में अधिक सम्मान और पहचान प्राप्त हुई है, जिससे उनके समग्र व्यक्तित्व विकास में सकारात्मक योगदान हुआ है।

सकारात्मक प्रभावों के बावजूद, बिलासपुर ज़िले में कार्यरत स्वयं सहायता समूहों को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। अपर्याप्त प्रशिक्षण और कौशल विकास की कमी के कारण आय-सृजन गतिविधियों की प्रभावशीलता सीमित रह जाती है। बाज़ार तक सीमित पहुँच और विपणन सहयोग के अभाव से लाभप्रदता प्रभावित होती है, वहीं कम साक्षरता स्तर के कारण लेखा-जोखा रखने और वित्तीय प्रबंधन में कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं। इसके अतिरिक्त, बाहरी संस्थाओं पर निर्भरता तथा स्वयं सहायता समूह गतिविधियों से होने वाली अनियमित आय इन समूहों की दीर्घकालिक स्थिरता के समक्ष गंभीर चुनौती प्रस्तुत करती है।

अध्ययन के निष्कर्ष : संख्यात्मक आँकड़े

तालिका १ : महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता पर स्वयं सहायता समूहों का प्रभाव (N = २००)

संकेतक	स्वयं सहायता समूह से पूर्व (%)	स्वयं सहायता समूह से पश्चात (%)
व्यक्तिगत बचत रखने वाली महिलाएँ	२८%	८२%
संस्थागत ऋण की उपलब्धता	२२%	७६%
स्वतंत्र आय-सृजन	३१%	६९%
साहूकारों पर निर्भरता	६४%	२१%

आँकड़े दर्शाते हैं कि स्वयं सहायता समूहों से जुड़ने के बाद महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, विशेष रूप से बचत की आदतों और औपचारिक ऋण तक पहुँच के संदर्भ में।

तालिका २ : सामाजिक सहभागिता एवं जागरूकता स्तर (N = २००)

पक्ष	वृद्धि (%)	कोई परिवर्तन नहीं (%)
सामुदायिक बैठकों में सहभागिता	७४%	२६%
सरकारी योजनाओं की जानकारी	६८%	३२%
सामाजिक गतिशीलता एवं संपर्क	७१%	२९%
सामाजिक अभियानों में भागीदारी	५९%	४१%

स्वयं सहायता समूहों की सहभागिता से महिलाओं की सामाजिक सहभागिता, गतिशीलता तथा सामाजिक एवं कल्याणकारी विषयों के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई है।

तालिका ३ : निर्णय-निर्माण में महिलाओं की भूमिका (N = २००)

निर्णय का क्षेत्र	सक्रिय भागीदारी (%)	सीमित/न के बराबर भागीदारी (%)
घरेलू वित्तीय निर्णय	६७%	३३%
बच्चों की शिक्षा	७२%	२८%
स्वास्थ्य संबंधी निर्णय	६९%	३१%
सामुदायिक स्तर के निर्णय	५४%	४६%

स्वयं सहायता समूहों से जुड़ने के बाद अधिकांश महिलाओं ने घरेलू एवं सामुदायिक निर्णय-निर्माण में अपनी भागीदारी बढ़ने की पुष्टि की है।

तालिका ४ : स्वयं सहायता समूहों की स्थिरता को प्रभावित करने वाली चुनौतियाँ (N = २००)

चुनौती	उत्तरदाता (%)
अपर्याप्त प्रशिक्षण एवं कौशल	६१%
सीमित बाज़ार पहुँच	५७%
कम साक्षरता एवं अभिलेख-रखरखाव की समस्या	४९%
बाहरी संस्थाओं पर निर्भरता	५२%
समूह गतिविधियों से अनियमित आय	५८%

संरचनात्मक और संस्थागत चुनौतियाँ स्वयं सहायता समूहों की दीर्घकालिक स्थिरता और प्रभावशीलता को प्रभावित कर रही हैं। संख्यात्मक आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूहों ने बिलासपुर ज़िले में महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता, सामाजिक सहभागिता तथा निर्णय-निर्माण क्षमता को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। तथापि, कौशल विकास, बाज़ार उपलब्धता, साक्षरता और संस्थागत निर्भरता से जुड़ी निरंतर चुनौतियाँ स्वयं सहायता समूहों की सतत प्रगति को सीमित करती हैं।

चर्चा (Discussion):

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि बिलासपुर ज़िले में महिला सशक्तिकरण को सुदृढ़ करने में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। स्वयं सहायता समूहों से जुड़ाव का सबसे प्रमुख परिणाम महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता में हुआ सुधार है। बचत और संस्थागत ऋण तक बढ़ी हुई पहुँच ने महिलाओं को आय-सृजन गतिविधियों में संलग्न होने तथा घरेलू व्ययों का अधिक प्रभावी ढंग से प्रबंधन करने में सक्षम बनाया है। साहूकारों पर निर्भरता में आई कमी वित्तीय सुरक्षा और आर्थिक स्वावलंबन की दिशा में एक सकारात्मक परिवर्तन को दर्शाती है, जो महिला सशक्तिकरण का एक अनिवार्य घटक है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूह सदस्य महिलाओं की सामाजिक सहभागिता और जागरूकता स्तर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। नियमित बैठकों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और सामुदायिक गतिविधियों में भागीदारी से महिलाओं के सामाजिक संपर्क, गतिशीलता और नेटवर्क का विस्तार हुआ है। सरकारी कल्याणकारी योजनाओं तथा सामाजिक समस्याओं के प्रति बढ़ी हुई जागरूकता यह दर्शाती है कि स्वयं सहायता समूह केवल वित्तीय संस्थान नहीं हैं, बल्कि सामाजिक अधिगम और सामूहिक चेतना के प्रभावी मंच भी हैं। यह तथ्य समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण का समर्थन करता है कि सामूहिक कार्रवाई से सामाजिक पूँजी और सामुदायिक एकता सुदृढ़ होती है।

महिलाओं की घरेलू और सामुदायिक निर्णय-निर्माण में भूमिका का सशक्त होना भी एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष है। पारिवारिक वित्त, बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य संबंधी निर्णयों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं में क्रमिक परिवर्तन को इंगित करती है। स्वयं सहायता समूहों में सहभागिता से महिलाओं का आत्मविश्वास, वार्तालाप एवं सौदेबाजी कौशल बढ़ा है। सामुदायिक स्तर पर, यद्यपि भागीदारी अपेक्षाकृत कम है, फिर भी स्थानीय चर्चाओं में महिलाओं की बढ़ती उपस्थिति उभरते नेतृत्व की ओर संकेत करती है।

इन सकारात्मक परिणामों के बावजूद, अध्ययन कुछ संरचनात्मक और संस्थागत चुनौतियों को भी रेखांकित करता है जो स्वयं सहायता समूहों की दीर्घकालिक स्थिरता को सीमित करती हैं। अपर्याप्त प्रशिक्षण, सीमित बाज़ार उपलब्धता, कम साक्षरता स्तर तथा बाहरी संस्थाओं पर निर्भरता के कारण समूह आधारित आय-सृजन गतिविधियों की प्रभावशीलता प्रभावित होती है। अनियमित आय से समूहों की स्थिरता और सदस्यों की प्रेरणा पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। ये चुनौतियाँ दर्शाती हैं कि यद्यपि स्वयं सहायता समूह सशक्तिकरण के प्रभावी साधन हैं, तथापि दीर्घकालिक और सतत सशक्तिकरण के लिए निरंतर संस्थागत सहयोग, कौशल विकास और बाज़ार से जुड़ाव अत्यंत आवश्यक है।

समग्र रूप से, यह चर्चा स्पष्ट करती है कि स्वयं सहायता समूहों ने बिलासपुर ज़िले में महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक और मानसिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। तथापि, इनके प्रभाव को और सुदृढ़ करने तथा सतत विकास को सुनिश्चित करने के लिए विद्यमान चुनौतियों का समाधान अनिवार्य है।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत अध्ययन का निष्कर्ष है कि बिलासपुर ज़िले में महिला सशक्तिकरण के लिए स्वयं सहायता समूह एक प्रभावी और परिवर्तनकारी माध्यम के रूप में उभरे हैं। सामूहिक बचत, संस्थागत ऋण की उपलब्धता तथा आय-सृजन गतिविधियों में सहभागिता के

माध्यम से स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता और वित्तीय सुरक्षा को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाया है। समूह गतिविधियों में नियमित भागीदारी से महिलाओं की सामाजिक सहभागिता में वृद्धि हुई है, उनके अधिकारों और कल्याणकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता बढ़ी है तथा आत्मविश्वास में सकारात्मक परिवर्तन आया है। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि स्वयं सहायता समूहों में सहभागिता से महिलाओं की घरेलू और सामुदायिक निर्णय-निर्माण में भूमिका सशक्त हुई है। परिवार और समाज में महिलाओं को अधिक मान्यता प्राप्त हुई है, जिससे उनके आत्मसम्मान और मानसिक सशक्तिकरण में वृद्धि हुई है। हालांकि, अपर्याप्त प्रशिक्षण, सीमित बाज़ार पहुँच, कम साक्षरता स्तर और बाहरी सहयोग पर निर्भरता जैसी चुनौतियाँ स्वयं सहायता समूहों की स्थिरता को प्रभावित करती हैं। समग्र रूप से, यह अध्ययन इस तथ्य पर बल देता है कि बिलासपुर ज़िले में महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका निर्णायक रही है। दीर्घकालिक प्रभाव को सुदृढ़ करने हेतु निरंतर संस्थागत सहयोग, क्षमता निर्माण तथा बाज़ारोन्मुख हस्तक्षेप आवश्यक हैं। स्वयं सहायता समूहों का सुदृढ़ीकरण समावेशी विकास और सामाजिक परिवर्तन में महिलाओं को सक्रिय भूमिका निभाने में सक्षम बना सकता है।

संदर्भ:

1) *APMAS. (2003). A study on SHG bank linkage in Andhra Pradesh. Hyderabad, India.*
2) *Bahera, A. R. (2013). Sustainable entrepreneurship: A perspective of SHGs in rural Orissa.*
3) *Baviskar, B. S. (2003). Impact of women's participation in local governance in rural India. Institute of Social Sciences.*
4) *Das, R. M. (2004). Micro finance through SHGs – A boon for the rural poor. Kurukshetra, 52(4).*
5) *Das, R. M. (2004). Micro finance through SHGs – A boon for the rural poor. Kurukshetra, 52(4).*
6) *Dasgupta, R. (2001). An informal journey through SHGs. Indian Journal of Agricultural Economics, 56(3), July–September.*
7) *Dasgupta, R. (2001). An informal journey through SHGs. Indian Journal of Agricultural Economics, 56(3), July–September.*
8) *Deshmukh-Ranadive, J. (2003). Women's participation in self-help groups and in Panchayati Raj institutions: Suggesting synergistic linkages. Centre for Women's Development Studies.*
9) *Fouillet, C., & Augsburg, B. (2007). Spread of the self-help groups banking linkage programme in India. In International Conference on Rural Finance Research: Moving Results (FAO & IFAD), Rome, March 19–21.*
10) *Kaur, A. (2008). Self-help groups (SHGs) and rural development.*
11) *Kumar, L. A. (n.d.). Women empowerment and entrepreneurship through SHGs.*
12) *National Bank for Agriculture and Rural Development. (n.d.). Self Help Group–Bank Linkage Programme (SHG-BLP). https://www.nabard.org/contentsearch.aspx?AID=225&Key=shg+bank+linkage+programme*
13) *Parthasarathy, A. (2015). A study on origin and growth of self-help groups in India. In Proceedings of the International Conference on Interdisciplinary Research in Engineering and Technology (pp. 250–254).*
14) *Sahoo, D. A. (2013, September). Self-help group and woman empowerment: A study on some selected SHGs. International Journal of Business & Management Invention, 2(9), 54–61.*
15) *Srivaman, V. P. (n.d.). Micro-finance, self-help groups and women empowerment: Current issues and concerns. Retrieved from http://www.bim.edu*
16) *Timine, R. (2011). Self-help groups (SHGs) and rural development.*
17) *Zubair, M. (2006). Women empowerment through micro-credit. In A. Gandhi (Ed.), Women's work, health and empowerment. Aakar Books.*